36

पुत्र होने की आशीष

(8:14–17)

1 यूहन्ना 3:1 में यूहन्ना ने लिखा, "देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं,[1] और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।" यह आयत अचम्भे से भर देने वाली, बल्कि भौचक्का कर देने वाली है। सृष्टि का बनाने वाला, अर्थात सब वस्तुओं का स्वामी, हमारा *पिता* है और हम उसकी *सन्तान* हैं। "कैसा" का अनुवाद *potapen* से किया गया है, जिसका मूल अर्थ "किस देश का" है।[2] जे. डब्ल्यू रॉबर्ट्स ने कहा है कि "परमेश्वर का प्रेम जो हमें उसकी सन्तान बनने की अनुमति देता है, इतना महान और अद्भुत है कि संसार की किसी चीज़ की तुलना उससे नहीं की जा सकती।"[3] एक लेखक ने परमेश्वर के प्रेम को "इस संसार से बाहर का प्रेम" कहा।[4]

हमें अपनी सन्तान कहने में परमेश्वर के प्रेम की महानता इस पाठ की अगली आयतों में देखी जा सकती है। रोमियों 8:14–17 में मुख्य विषय परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियां होने की आशीष है। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है:

> इन आयतों पर एकदम से ध्यान देने वाली बात यह है कि चारों आयतों में परमेश्वर के लोगों को *सन्तान* या *पुत्र* (जिसमें बेशक "पुत्रियां" भी हैं) नाम दिया गया है, और हर आयत में यह विशेष स्थिति पवित्र आत्मा के काम से जुड़ी है।[5]

पुत्र होने की आशिषों का अध्ययन करते हुए हम अपने आप से पूछें कि "क्या मैं परमेश्वर का विश्वासी बालक हूं?"

परमेश्वर के पुत्र (8:14)

एक प्रतिज्ञा बताई गई

वचन पाठ आरम्भ होता है, "इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते[6] हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं" (आयत 14)। "इसलिए" (*gar*) आयत 14 को पिछली आयतों से जोड़ता है। पौलुस "आत्मा की बातों पर" ध्यान लगाकर (आयत 5) और आत्मा के द्वारा "देह की क्रियाओं को मारते हुए" (आयत 13) "आत्मा के अनुसार" (आयत 4) चलने की बात कर रहा था। अब उसने संकेत दिया कि जो इस प्रकार चलते हैं, वे परमेश्वर के पुत्र हैं।

समस्या पर विचार किया

आयत 14 को कई बार आत्मा की *अगुआई* पर अधिक ज़ोर देते हुए संदर्भ से बाहर लिया

जाता है। पौलुस का इस प्रकार ज़ोर नहीं था। पौलुस ने आत्मा की *अगुआई में अपने आप को चलाने* की हमारी आवश्यकता पर ध्यान दिलाया है। NCV के अनुवाद में कहा गया है "परमेश्वर की सच्ची सन्तान वे हैं, जो परमेश्वर के आत्ज़ा को अगुआई करने देते हैं।" आयत 14 में आत्मा की अगुआई के बारे में बताने से अधिक हमारे "उसके पीछे चलने" के बारे में बताती है। डग्लस जे. मू ने लिखा है कि "आत्मा की अगुआई में हाने का अर्थ 'आत्मा के द्वारा ठहराए आपके जीवन की मूल स्थिति है।' "[7]

तौ भी छात्र आमतौर पर यह ज़ोर देते हैं कि हम "पवित्र आत्मा की अगुआई में *कैसे* चलते हैं?" प्रश्न का उज़र दिया। ईश्वरीय नेतृत्व की अवधारणा कोई नई अवधारणा नहीं है। भजन संहिता 23 के इन प्रसिद्ध शज़्दों पर विचार करें: "... वह धर्म के मार्गों में अपने नाम के निमिज़ मेरी अगुआई करता है" (आयत 3; KJV)। हम इस प्रकार के गीत गाते हैं:

> वो मेरी अगुआई करता है; कितना धन्य विचार है!
> स्वर्गीय शान्ति से भरी बातें!
> मैं जो भी करूं, जहां भी जाऊं,
> मेरी अगुआई करने वाला परमेश्वर का हाथ है।[8]

परन्तु ऐसे लोग हैं जो किसी कारण *पवित्र आत्मा* की अगुआई से चलने के साथ अलग महत्व को जोड़ देते हैं। वे रहस्यमयी, स्वप्न बताने वाली, दिमाग चकरा देने वाले दर्शन, बेकाबू आवेग, और अत्यधिक भावनाओं की बातें करते हैं। यदि आत्मा की अगुआई को समझने के लिए हम अपनी भावनाओं पर निर्भर होते तो हम सब डूब जाते, ज़्योंकि भावनाओं से अधिक उतार-चढ़ाव या कोई और बात नहीं है। जे. डी. थॉमस ने एक स्त्री के बारे में बताया, जिसे समाचार मिला कि उसका पुत्र जो सेना में था, किसी कार्रवाई के दौरान मारा गया है।[9] वह बर्बाद हो गई थी। फिर उसे समाचार मिला कि पिछला संदेश गलत था और उसका बेटा जीवित है, वह सही सलामत है। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। अन्त में उसे बताया गया कि दूसरा संदेश गलती से भेज दिया गया था, पहले वाला ही सही था। वह फिर से निराशा में डूब गई। यदि अपनी भावनाओं की मानकर हम उन्हें अपने काम या बात का आधार बनाएं तो हम ज़िसकने वाली रेत पर बना रहे हैं।

किसी को कैसे *पता* चल सकता है कि आत्मा की अगुआई में उसकी भावनाएं आत्मा के द्वारा चल रही हैं और उसकी अपनी मानसिक प्रक्रियाओं से निकल रही हैं या शैतान की ओर से हैं? कई बार यह उज़र दिया जाता है: "पवित्र आत्मा कभी किसी को बाइबल के उलट करने की अगुआई नहीं देगा।" यह तर्क समस्या के समाधान का कुछ भाग है। निश्चय ही यदि "अगुआई" परमेश्वर के वचन के उलट है तो यह आत्मा की "अगुआई" नहीं है, परन्तु यदि कथित "अगुआई" विश्वास से न होकर विचार से हो तो? मैंने यह जानने के लिए कि करिश्माई गुटों के लोग अपने आप यह नहीं मानते कि "आत्ज़ा की अगुआई से चलने वाला" इसलिए उनका सदस्य है कि वह कहता है कि वह "आत्ज़ा की अगुआई" से चलता या (चलती) है। "मैंने काफी करिश्माई (करिस्मैटिक) किताबें पढ़ी हैं।" एक करिश्माई प्रचारक ने किसी सदस्य के यह कहने की बात लिखी कि उसने यह बताने के लिए कि उसे कोई किताब खरीदनी है, "आत्ज़ा ने अगुआई" दी

थी। प्रचारक ने कहा कि उसकी लाइब्रेरी में वह पुस्तक पहले से थी, इसलिए उसे शक हुआ कि उस स्त्री को वह संदेश देने के लिए "आत्मा की अगुआई" मिली।

मैं फिर कहता हूं कि भावनाएं विश्वसनीय मार्गदर्शक *नहीं* हैं। यदि हम आत्मा की अगुआई में होने के लिए अपनी भावनाओं पर निर्भर होते तो हमें यह कभी *पता* नहीं चल पाता कि वह हमसे क्या चाहता है।

हम कैसे जान *सकते* हैं? वचन अर्थात उस लिखित वचन के पास जाकर जिसकी उसने प्रेरणा दी। मैं अत्यधिक ज़ोर नहीं दे सकता कि जीने के ढंग के लिए पवित्र आत्मा की इच्छा का एकमात्र *वास्तविक ढंग* बाइबल को पढ़ना और इसका अध्ययन करना है। जितना अधिक मैं बाइबल का अध्ययन करता हूं और इसके नियमों को अपनी सोच में मिला लेता हूं, उतना ही मैं परमेश्वर के मन के निकट आता हूं। जितना मैं वचन की शिक्षा को मानने का प्रयास करूंगा उतना ही मैं आश्वस्त हो सकता हूं कि मेरी अगुआई परमेश्वर के आत्मा द्वारा हो रही है।

क्या आत्मा कम स्पष्ट ढंगों से अगुआई कर सकता है? बाइबल आम तौर पर अवसर के "खुले द्वार" या "द्वार" की बात करती है, जो परमेश्वर ने "खोले" थे (देखें 1 कुरिन्थियों 16:9; 2 कुरिन्थियों 2:12; कुलुस्सियों 4:3)। अपने जीवन में मैंने "खुले द्वारों" अर्थात उन अवसरों से अवगत होने की कोशिश की है, जो यह संकेत दे सकते हैं कि परमेश्वर मुझ से अपने समय और गुणों का क्या करवाना चाहता है। इसके अलावा अपने जीवनों पर आत्मा के प्रभाव के ढंगों पर विचार करते हुए, हमें शायद भक्तिपूर्ण मित्रों की सलाह भी शामिल करनी चाहिए (देखें नीतिवचन 1:5; 12:15; 13:10), जो परमेश्वर की इच्छा की समझ, हमसे अधिक और गहरी रखते हैं।

शायद और सम्भावित ईश्वरीय प्रभाव गिनाए जा सकते हैं, परन्तु इस बात को समझें कि वचन के अलावा किसी और प्रकार की "अगुआई" *काल्पनिक* है। जीवन के हमारे अनुभवों को समझाना आवश्यक है और वे हमारे आग्रहों तथा इच्छाओं से रंगीन होते हैं। मैं दोनों ढंगों में आपको कड़ाई से चौकस करता हूं। पहले परमेश्वर के वचन के प्रकाश में "सब बातों को परखो" (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)। फिर किसी भी बात में कुछ कहने या करने में ईश्वरीय सहायता या अगुआई का दावा करने में बहुत-बहुत हिचकिचाहट करें। कुछ करने के लिए यह दावा करना कि परमेश्वर ने "मुझे बताया" या परमेश्वर ने कोई काम करने के लिए "मेरे मन पर बोझ डाला" घमण्ड दिला सकता है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि परमेश्वर हमारे जीवन में काम *नहीं* कर रहा है[10]; मैं यह कह रहा हूं कि यह पता केवल समय आने पर ही चल सकता है कि उसने क्या किया है। अब से बीस या तीस साल बाद आप पीछे मुड़कर आपके जीवन में होने वाली विशेष घटनाओं में परमेश्वर के हाथ को देख सकते हैं। अभी के लिए वचन में उसके आत्मा की अगुआई के *पीछे चलने* के लिए अपना पूरा ज़ोर लगाएं। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर आपके लिए "सब बातों को मिलाकर भलाई को ही उत्पन्न करता है" (रोमियों 8:28)।

प्रतिज्ञा पर ज़ोर दिया गया

परन्तु मैं दोहराता हूं कि रोमियों 8:14 में पौलुस का मुख्य लक्ष्य हमारे आत्मा के *पीछे चलने* का था न कि आत्मा की *अगुआई करने* का। पौलुस ने हमें आश्वस्त किया कि हम सचमुच "परमेश्वर के पुत्र" हैं, यदि हम आत्मा की बात मानें! कइयों को किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का पुत्र

होना रोमांचकारी बात लगेगी। लोग किसी धनवान के पुत्र होने का आनन्द लेंगे। परमेश्वर के पुत्र होना उससे कहीं अधिक रोमांचकारी है!

"पुत्र" के लिए शज़्द (*huios* का बहुवचन) आयत 14 में नर और मादा दोनों के लिए सामान्य रूप में इस्तेमाल किया गया है। आयत 16 में "परमेश्वर के पुत्रों" की जगह "परमेश्वर की संतान [*teknon* का बहुवचन]" वाज़्यांश का इस्तेमाल हुआ है। "परमेश्वर के पुत्र" शज़्द में पिता के पुत्र *और पुत्रियां* दोनों शामिल हैं।[11]

"देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है" कि हम परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियां कहलाएं (1 यूहन्ना 3:1)! एक बार किसी प्रसिद्ध स्त्री की छोटी बेटी से पूछा गया कि उसकी मां का सबसे प्रिय बच्चा कौन है। लड़की ने उज़र दिया, "मां डैनियल से सबसे अधिक प्रेम करती है ज़्योंकि वह सबसे बड़ा है और जॉन से सबसे अधिक प्रेम करती है ज़्योंकि वह सब से छोटा है और मुझ से सबसे अधिक प्रेम करती है ज़्योंकि मैं इकलौती लड़की हूं।"[12] ज़्या आप परमेश्वर के पुत्र या पुत्री हैं? तो आप कह सकते हैं कि परमेश्वर "आपसे सबसे अधिक प्रेम करता है"! इस बात को उसने आपके लिए अपने पुत्र यीशु को मरने के लिए भेजकर साबित कर दिया है!

लेपालक संतान (8:15, 16)

सौभाग्य

आयत 15 में पौलुस ने ज़ोर देना ज़ारी रखा कि परमेश्वर की संतान होना कैसे विशेष बात है: "ज़्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो[13] परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अज़्बा, हे पिता [*pater*] कहकर पुकारते हैं" (रोमियों 8:15)।

आयत 15 के सज़्बन्ध में "Spirit/spirit" का प्रश्न आम पाया जाता है। अंग्रेज़ी के कई अनुवादों में आयत में इस शज़्द के पहले इस्तेमाल में बड़ा "S" है (देखें KJV; NIV) और कुछ अनुवादों में दोनों जगह बड़े "S" का इस्तेमाल किया गया है (देखें REB)। यदि बड़े "S" का इस्तेमाल दो बार किया जाए, तो इसका अर्थ होगा "जो आत्मा तुम ने पाया उसने तुज़्हें दास नहीं बनाया बल्कि पुत्र बनाया है।" यदि दोनों जगह छोटा "s" (जैसे NASB में) इस्तेमाल किया जाता है तो यहां "spirit" [*pneuma*] शज़्द का इस्तेमाल "सहयोग की आत्मा" की तरह "मिजाज़, मूड, या स्थिति"[14] का संकेत देने के लिए गौण अर्थ में किया जाता है। (इस उपयोग के बाइबल के उदाहरण के लिए, देखें 2 तीमुथियुस 1:7।) बड़े "S" का इस्तेमाल किया जाए या छोटे "s" का, संदेश वही है कि जब हमारा उद्धार हुआ तो परमेश्वर ने हमें *दास* नहीं बल्कि *पुत्र* बनाया![15] गलातियों 4:7 में पौलुस ने इसे इस प्रकार व्यज़्त किया: "इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और अब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।"

दासत्व और पुत्रत्व के बीच के अन्तर को पौलुस के पाठक हम से बेहतर समझते थे। यह अन्तर दासता और साहस का, दुबकने और आत्मविश्वास का, परमेश्वर को दण्ड देने वाले के रूप में देखने और उसे पिता के रूप में देखने की तरह था।[16] गुलाम के साथ अपने मालिक के सज़्बन्ध में यदि किसी बात का अर्थ था तो वह भय था; परन्तु पौलुस ने कहा कि "हमें दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि हम फिर भयभीत हों," बल्कि हमें "लेपालकपन की आत्मा मिली है"! हम

गुलाम नहीं हैं, जो अपने मालिक के सामने थर-थर कांपते हों, बल्कि हम पुत्र हैं जो अपने पिता की उपस्थिति से तसल्ली का अहसास करते हैं!

ज़्योंकि हमें इस प्रकार से आशीष मिली है इसलिए, "हम हे अज़्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं" (8:15ख)। "अज़्बा" अरामी भाषा का शज़्द है जिसका अर्थ "पिता" है, बल्कि इससे भी बढ़कर है। यह "पिता" के लिए *बच्चे* द्वारा "पापा" या "डैडी" कहने की तरह है।[17] अधिकतर यहूदी परमेश्वर से बात करते समय इस घनिष्ठ शज़्द का इस्तेमाल नहीं करते, परन्तु यीशु ने किया। गतसमनी बाग में, उसने पुकारा, "हे अज़्बा, हे पिता, मुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौ भी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो" (मरकुस 14:36)।

क्रिस बुलर्ड ने प्राचीन यरूशलेम के भीड़ भरे बाज़ारों में से गुज़रने तथा बच्चों के बाहें फैलाए अपने पिताओं को "अज़्बा! अज़्बा" पुकारने को सुनने की बात बताई।[18] ऐसी पुकार में बहुत कुछ हो सकता है, जैसे "पापा, मैं थक गया हूं! मुझे उठा लो!"; "मुझे शोर-शराबे वाली भीड़ से डर लगता है; पापा, मुझे उठा लो!"; "पापा, मेरी सहायता करो, मेरी सहायता करो!" "अज़्बा" परमेश्वर के साथ हमारे पिता/संतान सज़्बन्ध को दिखाने के लिए एक सुन्दर शज़्द है।

प्रक्रिया

हम परमेश्वर की संतान कैसे बनें? पौलुस ने कहा कि हमें "*लेपालकपन*[19] की आत्मा मिली है ..." (8:15ख)। एक और जगह बाइबल यह सिखाती है कि हम *आत्मिक* जन्म लेकर परमेश्वर की संतान बनते हैं (यूहन्ना 3:3, 5; 1 पतरस 1:22, 23; देखें 1 यूहन्ना 2:29; 3:9; 4:7; 5:1, 4, 18) परन्तु कई बार पौलुस ने *लेपालक* के रूपक का इस्तेमाल किया (देखें गलातियों 4:5; इफिसियों 1:5)। दोनों रूपक एक ही बात अर्थात परमेश्वर की संतान बनने की प्रक्रिया को देखने के थोड़े से अलग ढंग हैं। दोनों में उस प्रक्रिया के अलग पहलू पर ज़ोर दिया गया है।

"लेपालक" का अनुवाद *huios* "पुत्र" *thesia* "एक स्थान" को मिलाने वाले मिश्रित शज़्द *huiothesia* से किया गया है। इसका अर्थ किसी व्यज़्ति को पुत्र (संतान) का स्थान स्थिति और अधिकार दिए जाने के बारे में है चाहे जन्म के द्वारा वह अपने माता-पिता का न हो।[20] जहां तक मुझे मालूम है यहूदियों में लेपालकपन या गोद लिया जाना नहीं होता था, परन्तु अन्य समाजों में यह आम था। एफ़. एफ़. ब्रूस ने लिखा है कि "पहली शताज़्दी के रोमी जगत में लेपालक पुत्र वह होता था जिसने अपने गोद लेने वाले पिता को उसका नाम और उसकी सज़्पज़ि का वारिस होने के लिए जानबूझकर चुना होता था।"[21] कहा जाता है कि परमेश्वर का केवल एक "स्वाभाविक" पुत्र था और हम शेष उसके गोद लिए हुए पुत्र हैं।[22]

गोद लिए जाने या लेपालकपन में विशेष बात माता-पिता द्वारा किसी बच्चे को *चुनकर* उसे अपने बच्चे की तरह प्यार देना और पालन-पोषण करना थी। अपनी बेटी एंजी और उसके पति डैन द्वारा नन्हे कोरियन लड़के एलाइज़ा रे लव जॉय को गोद लिए जाने के बाद से मैं इस प्रक्रिया को और सराहने लगा हूं। एंजी के पास *एलाइजा 'ज़ स्टोरी* नामक एलबम बना रखी थी, जिससे पता चलता था कि उसे कैसे गोद लिया गया है ।[23] उस पुस्तक के कुछ अंश इस प्रकार हैं:

> जब तुझे लेने का समय आ गया, तो मैं एक बड़े जहाज़ पर गई। ओज़्लाहोमा से कोरिया बहुत दूर है! हम बहुत पहले उस जहाज़ पर बैठे थे। जहाज़ पर काफ़ी लोग सो रहे थे; परन्तु हम इतने उतावले थे कि हमें नींद नहीं आई!
>
> कोरिया पहुंचने पर, हम तुझ से पहली बार मिले। जब हमने तुझे पहली बार देखा ... , तो तुम बहुत छटपटा रहे थे और प्रसन्न थे। तुमने हमें एक बहुत बड़ी, एलाइज़्ज़ा की शानदार मुस्कान दी। हमने तुझ से बहुत प्रेम किया! ...
>
> हमें मालूम था कि तेरे माता-पिता बनकर कितने आशीषित हैं। हमने तेरा नाम एलाइजा रखा, जिसका अर्थ है "प्रभु ही परमेश्वर है।" तू परमेश्वर की एक सुन्दर संतान जन्मा था और हमारी प्रार्थना है कि वह जीवन में तुझे आशीष दे।

एंजी और डैन ने एलाइजा को चुना, वैसे ही परमेश्वर ने हमें अपने परिवार में गोद लेकर चुन लिया![24] फिलिप्स के अनुवाद में कहा गया है कि हमें "परमेश्वर के परिवार के बड़े दायरे में गोद लिया गया है। उस तथ्य का स्वाद लेने के लिए समय निकालें।"

हमारा गोद लिया जाना इस बात को प्रभावित करने वाला होना चाहिए कि हमारा जीवन और काम कैसे हों। इस कारण NLT में है "तुज़्हें" परमेश्वर के अपने बच्चों की तरह *व्यवहार* करना चाहिए ... जिन्हें उसके परिवार में गोद लिया गया है।

प्रमाण

यह विचार करना रोमांचकारी है, परन्तु वह कैसे *जांच* सकते हैं कि हम सचमुच परमेश्वर के पुत्र हैं? पौलुस ने आम तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली रोमी भाषा का इस्तेमाल करते हुए प्रमाण देना जारी रखा: "आत्मा आप ही[25] हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं" (रोमियों 8:16)। विद्वानों में इस बात पर कुछ चर्चा होती है कि इसका अनुवाद "हमारी आत्मा *के साथ*" होना चाहिए या "हमारी आत्मा *से,*" परन्तु वचन को पढ़ने का सबसे स्वाभाविक ढंग "हमारी आत्मा के साथ" है: "के साथ गवाही देता है" का अनुवाद *summartureo* से किया गया है, जो "गवाही" के लिए *martureo* शज़्द के साथ "के साथ" के लिए उपसर्ग *sum* को मिलाता है।

बाइबल सिखाती है कि कोई बात "दो या तीन गवाहों के मुंह से" पज़्की मानी जाए (मज़्ी 18:16; देज़ें व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; यूहन्ना 8:17)। एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि किसी बात की पुष्टि के लिए कि तुम सचमुच परमेश्वर की संतान हो दो गवाह यानी पवित्र आत्मा और आपकी आत्मा काफ़ी हैं। NCV में है "आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ यह कहने के लिए मिल जाता है कि हम परमेश्वर की संतान है।" JB के अनुवाद में है, "आत्मा आप ही और हमारी आत्मा मिलकर गवाही देते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं।"

कई लेखक आत्मा की गवाही पर टिप्पणी करते हुए, "तुज़्हारे मन को पवित्र आत्मा के आश्वासन की भावना" की बात करते हैं। ऐसी व्याज़्या में कम से कम चार कमियां हैं। पहली, यह हमारी आत्माओं *से* गवाही होगी न कि हमारी आत्माओं के साथ। दूसरा (जैसा पहले देखा गया है) भावनाएं बदलती रहती हैं और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता, इसलिए यह आत्मा को अविश्वसनीय गवाह बना देगा। तीसरा, वे लोग भी जो "भावना की गवाही" में विश्वास रखते

हैं, दावा नहीं करेंगे कि परमेश्वर के हर विश्वासयोग्य संतान में ऐसी "भावना" मिलती है। परन्तु आत्मा गवाही *हर* बच्चे के लिए है। इस कारण गवाही चाहे जो भी हो यह केवल मन की भावना नहीं होनी चाहिए। चौथा, वचन में या संदर्भ में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पौलुस के मन में ऐसी व्याज़्या थी। आत्मा की गवाही का यह ढंग वचन की सावधानीपूर्वक व्याज़्या के बजाय टीकाकार की डॉज़्ट्रिन सज़्बन्धी पक्षपात को दिखाता है।

आयत 16 को इससे पिछली आयतों से अलग नहीं किया जाना चाहिए। पौलुस ने केवल इतना कहा था कि हमें "आत्मा" मिली (पवित्र आत्मा?) "जिससे हम हे अज़्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं" (8:15ख)। NEB में 15 और 16 आयतों के बीच सज़्बन्ध पर ज़ोर दिया गया है, जो कहता है कि "आत्मा ... हमें पुत्र बनाता है, जो हमें 'अज़्बा! पिता!' पुकारने के योग्य बनाता है। उस पुकार *में* परमेश्वर का आत्मा हमारी आत्मा के साथ गवाही देने के लिए मिल जाता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं" (आयत 15, 16ख; देखें RSV)। रोमियों 8:15 के लिए क्रॉस रेफरेंस पर ध्यान दें कि गलातियों 4:6 में पवित्र आत्मा "हे अज़्बा! पिता" पुकारता है जबकि रोमियों 8:15 में हमारी आत्माएं "हे अज़्बा! हे पिता!" पुकारती हैं, यह दोहरी गवाही है। हमारी आत्माएं गवाही दे रही हैं कि "परमेश्वर हमारा अज़्बा और हमारा पिता है!" और आत्मा जैसे सुर में सुर मिला रहा हो, "हां बिल्कुल सही! परमेश्वर सचमुच इनका पिता है!"

पवित्र आत्मा ने इस सत्य की गवाही कब दी? जब उसने वचन को लिखने की प्रेरणा दी। कुरिन्थियों के नाम लिखते हुए पौलुस ने ज़ोर दिया कि उसकी कही बातें "आत्मा की सिखाई हुई" थीं (1 कुरिन्थियों 2:13)। नये नियम में आत्मा ने गवाही दी थी कि हम आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह को मानने पर परमेश्वर के परिवार का भाग बन जाते हैं। आत्मा की गवाही पर ध्यान से विचार करें: "ज़्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, *परमेश्वर की सन्तान* हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:26, 27)।

कोई पूछ सकता है, "ज़्या आपको पज़्का विश्वास है कि पवित्र शास्त्र को आत्मा की 'गवाही' कहा जा सकता है?" इब्रानियों 10 में देखें, जहां लेखक ने कहा कि "पवित्र आत्मा ... हमें *गवाही देता है*" (आयत 15)। आत्मा ने यह कैसे कहा? लेखक ने आगे बताया:

> कि प्रभु *कहता है;* कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उनसे बान्धूंगा
> वह यह है, कि
> मैं अपनी व्यवस्थाओं को उनके हृदय पर लिखूंगा
> और मैं उनके विवेक में डालूंगा।
> फिर वह [पवित्र आत्मा] यह कहता है, कि
> मैं उनके पापों को, और उनके अधर्म के कामों को
> फिर कभी स्मरण न करूंगा (आयतें 10:16, 17)।

यह उद्धरण यिर्मयाह 31:31, 34 से लिया गया है, जिसे लिखने की प्रेरणा पवित्र आत्मा ने दी। जिम मैज़्गुइगन ने लिखा:

> लोगों के लिए पवित्र शास्त्र पर अपने आश्वासन को जो अनुभवों को अर्थ देता है आधार बनाना निर्णायक है। जब हम अनुभवों को उद्धार का आधार बनाते हैं तो हम ने घोड़े के आगे गाड़ी को लगा दिया।
>
> ... आत्मा ने बाइबल में गवाही दी, आओ हम उसमें गंभीर हों। हम अपने अनुभवों की व्याज़्या बाइबल से करें न की बाइबल की व्याज़्या अपने अनुभवों से।[26]

आरज़्भिक प्रचारक रोमियों 8:16 पर सिखाते समय आमतौर पर अदालत के दृश्य की कल्पना करते थे। अपने उदाहरण के वे पहले गवाह के रूप में पवित्र आत्मा को बुलाते और आत्मा के यह कहने की कल्पना करते, "यदि तुम यीशु में विश्वास करते हो और उसकी इच्छा को पूरा करते हो, तो तुम परमेश्वर की संतान हो।" वे अपनी बात को साबित करने के लिए नये नियम से हवाले देते थे। फिर अपने उदाहरण में वे किसी काल्पनिक मसीही को खड़ा होकर गवाही देने के लिए बुलाते: "मैंने वह *किया* है, जो आत्मा कहता है, सो मैं परमेश्वर की संतान हूं!" कोई इस ढंग को सरलतम कह सकता है, परन्तु यह दिखाता है कि पवित्र आत्मा मनुष्य की आत्मा *के साथ* कैसे गवाही दे सकता है।

ज़्या हमें *पता* चल सकता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं? इस अर्थ में नहीं कि हमें मालूम है कि आग गर्म होती है और बर्फ़ ठण्डी होती है।[27] पौलुस ने कहा कि "हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं" (2 कुरिन्थियों 5:7) और हम इसमें जोड़ सकते हैं, "चख कर, सूंघ कर या महसूस करके।" तौ भी एक बोध है, जिससे हम जान सकते हैं कि हम परमेश्वर के प्रिय हैं। यूहन्ना ने कहा, "मैंने तुज़्हें, ... इसलिए *लिखा है*; कि तुम *जानो,* कि अनन्त जीवन तुज़्हारा है" (1 यूहन्ना 5:13)। मेरे गुरु जे. डी. थॉमस ने कहा है, "ज़्या यह अद्‌भुत है कि हमें *लिखित रूप में मिला है* कि हम परमेश्वर के पुत्र हैं?"[28]

परमेश्वर के वारिस (8:17)

सौभाग्य

यह प्रमाण लेने के बाद कि हम सचमुच परमेश्वर की सन्तान हैं, पौलुस ने कहा, "और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस" (आयत 17क)। "परमेश्वर के वारिस?" यह विचार कल्पना को स्तज़्ध कर देता है। बहुत साल पहले एक बुजुर्ग महिला हैनरीटा गैरेट की मृत्यु हो गई जो फिलाडेल्फिया की रहने वाली थी। मुश्किल से दर्जन भर लोग उसके जनाज़े पर आए, परन्तु फिर इसकी वसीयत की घोषणा करने वाली अदालत ने बताया कि इस नि:संतान स्त्री ने अपने पीछे 1.7 करोड़ डॉलर छोड़े तो अचानक हर कोई उसका वारिस बनना चाहता था। कई साल बाद भी वे कानूनी उलझन को सुलझाने की कोशिश करते रहे। उसकी सज़्पज़ि बढ़कर 3 करोड़ डॉलर हो गई और उसके वारिस होने का दावा करने वालों की गिनती छबीस हज़ार हो गई।[29] हैनरीटा गैरेट के वारिस होना अच्छी बात हो सकती है, परन्तु *परमेश्वर के* वारिस होना इससे भी अधिक रोमांचकारी बात होगी।

पतरस ने परमेश्वर के विश्वासयोग्य सन्तान की प्रतीक्षा करते हुए विरासत की बात की। उसने इसे "एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास" कहा (1 पतरस 1:4)। आर. सी. बेल ने

अवलोकन किया कि स्वर्गदूतों को कभी किसी ने "परमेश्वर के वारिस" नहीं कहा, केवल मनुष्यों को ही कहा गया है। उसने आश्चर्य जताया, "हम अपनी विरासत के विषय में इतना कम उज़्ेजित ज़्यों होते हैं ?"[30]

"वारिस" शज़्द एक बार फिर ज़ोर देता है कि हम अपना उद्धार कमाते नहीं हैं, बल्कि हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है।[31] यदि आप किसी के लिए काम करते हैं तो आप अपने वेतन को "मीरास" नहीं कह सकते। काम करके या व्यवहार करके या सेवा उपलज़्ध कराकर कमाया गया धन विरासत नहीं होता। विरासत तो किसी दूसरे द्वारा कमाया गया धन होता, जो वारिस को दिया जाता है। वैसे ही हमारी सनातन मीरास यीशु द्वारा "कमाई गई" और हमें "दी" जाएगी! अद्‍भुत अनुग्रह!

पुत्रत्व की आशिषों की बात करते हुए पौलुस ने पुत्रत्व की आशिषें बताने के लिए चकित कर देने वाली बातों के साथ समाप्त नहीं किया। उसने आगे कहा, "मसीह के संगी वारिस हैं" (रोमियों 8:17ख)। रोमियों 8:29 में मसीह को "बहुत भाइयों में पहलौठा" कहा गया। परमेश्वर के परिवार की बात करते हुए हम मसीह को अपने आत्मिक "बड़े भाई" के रूप में मान सकते हैं।[32] आयत 17 में पौलुस ने कहा कि हम अपने बड़े भाई के साथ "संगी वारिस"! हैं। संगी वारिस का अनुवाद *sunkleronomos* से किया गया है, जो "वारिस" के लिए शज़्द *kleronomos* के साथ *sun* उपसर्ग "के साथ" को मिलाता है।

एक पल के लिए उस महिमा और सज़्मान की कल्पना करें जो अपने पिता के पास वापस जाने पर मसीह को मिला। नहीं, हम इसे समझने का आरज़्भ भी नहीं कर सकते, परन्तु कोशिश करें। इब्रानियों के लेखक ने कहा है कि "उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था" यीशु को क्रूस सहने के योग्य बनाया (इब्रानियों 12:2)। पौलुस ने कहा कि मसीह "महिमा में ऊपर उठाया गया" (1 तीमुथियुस 3:16)। मैं और आप उसकी महिमा में भागीदार होंगे! रोमियों 8:17 के अन्त में पौलुस ने "उसके साथ महिमा" पाने की बात की। आयत 18 में उसने "उस महिमा की जो हम पर प्रकट होने वाली है" बात की। आयत 30 में भविष्य की ओर आगे देखते हुए उसने कहा कि परमेश्वर ने उन्हें "महिमा" दी जिन्हें उसने धर्मी ठहराया।

याद रखें कि यीशु को विरासत अधिकार से मिलती है, जबकि हमें वह अनुग्रह से मिलेगी। वह इसका अधिकारी है; हम नहीं। मैंने बड़े बच्चों को विरासत पर झगड़ते देखा है, हर कोई अपना भाग लेने के साथ-साथ ... और पाने की कोशिश करता है। यह बड़ी बेकार बात है। यीशु ऐसा नहीं करता। केवल वही अकेला है जिसे विरासत पाने का अधिकार है, परन्तु वह आराम से इसे अपने भाइयों और बहनों में बांट देगा!

ज़्या मुझे सचमुच समझ है कि "मसीह के साथ संगी अधिकारी" होने का ज़्या अर्थ है ? नहीं। परन्तु मैं विश्वास से मानता हूं कि ऐसा होगा और मैं उस अद्‍भुत सौभाग्य के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं।

एक उपाय

परन्तु सौभाग्य के लिए एक उपाय अर्थात एक शर्त है जिसे पूरा किया जाना आवश्यक है। आयत 17 में पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, "जबकि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ

महिमा भी पाएं" (आयत 17ग)। यदि हमें मसीह के साथ संगी अधिकारी होना है, तो हमें संगी दुख उठाने वाले भी होना आवश्यक है। ब्रूस ने लिखा कि " 'अब दुख उठाना, उसके बाद महिमा पाना' नये नियम का बार-बार आने वाला विषय है।"[33] (देखें यूहन्ना 15:20; 2 तीमुथियुस 2:12.) बच्चों के एक गीत में ये शज़्द पाए जाते हैं: "यदि तुम अपना क्रूस नहीं उठा सकते, तो तुम अपना मुकुट नहीं पहन सकते।"[34] (मज़्ती 16:24, 25.)

कष्ट उठाने पर चर्चा "आशा से जीवित रहना" (देखें रोमियों 8:18) पाठ में की गई है। अब मैं महिमा की बात को हाईलाइट करना चाहता हूं: "यदि हम सचमुच उसके साथ दुख उठाएं ... तो हम उसके साथ *महिमा* भी पा सकते हैं।" जे. डी. थॉमस ने लिखा है, "यह आयत हमें प्रभु के साथ अपने सज़्बन्धों की ऊंचाइयों में ले जाती है।"[35]

सारांश

"तुज़्हें लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अज़्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं" (रोमियों 8:15ख-17क)। यह कुछ रोमांचकारी बात पाने के बारे में है! हम में से कुछ लोग कुछ धार्मिक समूहों के भावुकतावाद से घृणा करने लगते हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रभु के साथ हमारे सज़्बन्ध में भावना का कोई महत्व नहीं है। परमेश्वर ने हम पर पुत्रत्व की आशिषें अधिकाई से दी हैं। हमें इसके लिए उसका धन्यवाद करना चाहिए! हमें इसके लिए उसकी महिमा करनी चाहिए!

अन्त में मैं पूछना चाहता हूं, "*ज़्या* आप परमेश्वर की संतान हैं?" आत्मा की गवाही याद रखें: "ज़्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:26, 27)। ज़्या आप यीशु और उसके बलिदान में विश्वास रखते और भरोसा करते हैं? ज़्या आपने अपने विश्वास को दिखाया है? ज़्या आप अपने विश्वास को दिखाने के लिए बपतिस्मे के पानी में गाड़े गए हैं, यदि नहीं तो आज ही प्रभु की आज्ञा मानने का सबसे अच्छा समय है।

यदि आपने बपतिस्मा ले लिया है, तो ज़्या आप परमेश्वर की संतान *की तरह काम कर रहे* हैं? हाई स्कूल में मेरे पिता व्यावहारिक कृषि के मेरे शिक्षक और एफ़. एफ़. ए.[36] में सलाहकार थे। हर साल शरद ऋतु में वह अपने छात्रों को विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपने जानवरों को दिखाने के लिए ओज़्लाहोमा नगर के स्ट्रेटफेयर में ले जाते। वह हमें सप्ताह के आरज़्भ में ले जाते, हमें अपने पशुओं की देखभाल के लिए छोड़ देते और फिर सप्ताह के अन्त में वापस आ जाते, जब प्रतियोगिताओं का समय हो जाता। पहली बार उन्होंने हमें मेले के मैदान में छोड़ा था, उन्होंने मेरा नाम मेरी एफ़. एफ़. ए. जैकेट पर लिखाते हुए कहा, "याद रखना कि यह मेरा नाम भी है।"[37] मुझे इस बात की समझ थी कि उनके कहने का ज़्या अर्थ है। जब वह चले जाते तो मुझे समझदारी से काम करना आवश्यक होता। यदि मैं कोई गलती करता तो इससे उनके नाम के साथ-साथ मेरा नाम भी खराब होता। आप और मैं परमेश्वर के बेटे और बेटियां हैं। जब हम वैसे नहीं रहते जैसे

हमें रहना चाहिए तो इससे हमारे पिता की बदनामी होती है। ज़्या आपने उस प्रकार से चलने या बातें करने में नाकाम रहकर जैसे उसके बच्चे को चलना चाहिए, परमेश्वर के नाम को अपमानित किया है ? तो मैं आपसे बीते आज से समस्याओं को सुलझाने के लिए कहता हूं (प्रेरितों के काम 8:22; 1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16)। ताकि आप एक बार फिर से पुत्र होने की आशीष का आनन्द ले सकें!

टिप्पणियां

[1]"संतान" के लिए यूनानी शज़्द *teknon* है। [2]जॉन. आर. स्टॉट, *दि लैटर ऑफ़ जॉन: एन इंट्रोडज़्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988), 122. [3]जे. डज़्ल्यू. राबर्ट्स, *दि लैटर ऑफ़ जॉन,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैज़्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1968), 76. [4]वारेन डज़्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एज़्पोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विज़्टर बुज़्स, 1989), 504. [5]जॉन आर. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज फ़ॉर द वर्ल्ड,* द बाइबल स्पीज़्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 230. [6]"चलाए चलते" यूनानी शज़्द का अनुवाद *ago* किया गया है। [7]डग्लस जे. मू, *रोमन्स* , दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पज़्लिशिंग हाउस, 2000), 260. [8]जे. एच. गिलमोरे, "ई लीडथ मी," *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* सं. एण्ड संपा. अल्टन एच. हावर्ड लुइसियाना (वेस्ट मोनरो, लॉ: हावर्ड पज़्लिशिंग कं., 1994)। [9]जे. डी. थॉमस, ज़्लास नोट्स, *रोमन्स,* अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (1955). [10]इस पुस्तक में आगे "सहायता चाहिए? (8:26–28)" और "परमेश्वर का उपाय (8:28)" अध्ययनों को देखें।

[11]पौलुस के पास यहां "पुत्र" शज़्द का इस्तेमाल करने का कोई भी कारण हो सकता है। शायद यह इसलिए था ज़्योंकि उसके समय में पुत्र को पुत्री से अधिक वारिस माना जाता था। हो सकता है कि इस शज़्द का इस्तेमाल *पुत्र* अर्थात यीशु मसीह के साथ मिलाने में हमारी सहायता के लिए किया गया हो (देखें रोमियों 8:17)। [12]डेविड एफ़. बर्गस, सं., *इन्साइज़्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशंस* (सेंट लुईस: कन्कोर्डिया पज़्लिशिंग हाउस, 1988), 131 से लिया गया। [13]"फिर" शज़्द संकेत देता है कि कालांतर में वे पाप के कारण भय के दास थे और ज़्योंकि उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को पूरी तरह से नहीं माना। आत्मा उन्हें व्यवस्था/कर्मों के उस प्रबन्ध में वापस नहीं ले जा रहा था जिसमें भय व्यापक था; बल्कि उन्होंने अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध के अधीन रहना था। [14]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988), 314. [15]अध्याय 6 में पौलुस ने कहा कि हम "धार्मिकता के दास" हैं (आयत 18), परन्तु हम में दासों वाली "आत्मा" (स्थिति) नहीं थी। हमारा दृष्टिकोण पुत्रों वाला है। [16]जिम टाउनसेंड, *रोमन्स: लेट जस्टिस रोल* (एलजिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पज़्लिशिंग कं., 1988), 67 से लिया गया। [17]यदि आपके समाज के बहुत छोटे बच्चे "पिता" के लिए किसी अगले शज़्द का इस्तेमाल करते हैं, तो "पापा" और "डैडी" या की जगह उसी शज़्द का इस्तेमाल करें। [18]ओवरलैंड पार्क चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ओवरलैंड, कैनसस, 16 सितंबर 1990 को दिया गया क्रिस, आर. बुलर्ड का "कोई दण्ड नहीं, कोई अलगाव नहीं" पर संदेश, कैसेट। [19]किसी कारण NIV में इस आयत में यूनानी शज़्द का अनुवाद "पुत्रत्व" के रूप में किया गया है, परन्तु आयत 23 में इसी शज़्द को "पुत्रों के रूप में गोद लिया जाना" है। [20]डज़्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कज़्पलीट एज़्सपोजिस्टरी डिज़्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पज़्लिशर्स, 1985), 13–14.

[21]एफ़. एफ़. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1985), 157. [22]8:23 में पौलुस ने ध्यान दिलाया कि अब पुत्र होने के सौभाग्य का आनन्द लेने के बावजूद, "गोद लेने के प्रक्रिया" मसीह के वापस आने से पहले पूरी नहीं होगी। [23]यह पुस्तक उसके लिए MyPublisher.com, 2004 द्वारा छापी और जिल्दबंद की गई। [24]देखें इफिसियों 1:4; कुलुस्सियों 3:12; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13; 2 तीमुथियुस 2:10; तीतुस 1:1; 1 पतरस 1:1. [25]KJV में "आप ही" के लिए "Himself" के बजाय "Itself" है। "itself" गलत अनुवाद नहीं है ज़्योंकि आत्मा के लिए यूनानी शज़्द (*pneuma*) अलिंगी

शब्द है। परन्तु "itself" शब्द से यह प्रभाव जाता है कि पवित्र आत्मा *व्यक्ति* न होकर *वस्तु* है, इसलिए "Himself" (NKJV) को प्राथमिकता दी जाती है। [26]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू दि बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोनटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 244-45. [27]इसे "अनुभवाश्रित" प्रमाण कहा जाता है यानी जिसे पांच इंद्रियों द्वारा ही महसूस किया जा सके। [28]थॉमस। [29]हेल्फर्ड ई. लक्कॉक, *प्रीचिंग वेल्यूस इन द एपिस्टल ऑफ़ पॉल,* अंक 1, *रोमन्स एण्ड फर्स्ट कोरन्थियंस* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1959), 55 से लिया गया। [30]आर. सी. बेल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 89.

[31]मैक्गुइगन, 246. [32]मैंने, "बड़ा भाई" वाक्यांश बचपन से जवानी तक कई बार सुना है। प्रचार करना आरम्भ करने पर मैंने उसी अभिव्यक्ति को नये नियम में व्यर्थ में देखा है। यह शायद रोमियों 8:29 पर आधारित है। [33]ब्रूस, 150. [34]लेखक अज्ञात (http://www.wlcamp.org/songs.htm#Do%20Lord; Internet; accessed 20 फरवरी 2004)। [35]जे. डी.थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 61. [36]यूचर फार्मर्स ऑफ़ अमेरिका एक संगठन है, जो जवानों को खेती बाड़ी और जीव जंतुओं की शिक्षा देता है। [37]मेरे पिता और मेरे दोनों के नाम के साथ डेविड लगता है।